भगत कबीर – सबद ३९

कउनु को पूतु पिता को का को ॥

रागु गउड़ी भी सोरठि भी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३३०

कउनु को पूतु पिता को का को ॥
कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥
हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥
हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥
कउन को पुरखु कउन की नारी ॥
इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥२॥
कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥
गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥३॥३९॥

सार: प्रत्येक वस्तु एक साँझा मूलभूत सार से उत्पन्न होती है और अंततः उसी में लौटती है जिससे स्थिति और व्यक्तित्व के भेद केवल भ्रम बन जाते हैं। मेरा और तुम्हारा', या 'ऊंचा और नीचा' जैसे विभाजन केवल रूपों की क्षणिक दुनिया में महत्व रखते हैं। जैसे-जैसे यह रूप बदलते हैं, हमारी पहचान बदलती है, फिर भी मूल वास्तविकता स्थिर रहती है। हमारी पीड़ा तब बढ़ जाती है जब हम इन अस्थायी भूमिकाओं को अपना वास्तविक रूप समझने की भूल कर बैठते हैं। बुद्धि तब उभरती है जब हम जन्म, हानि और नवीनीकरण के हर अनुभव के पीछे के स्थायी सार को पहचानते हैं। इस एकत्व को अपनाकर, हम अस्थायी भेदभावों को पार करते हैं और अपने साँझा अस्तित्व के गहन सत्य से जुड़ते हैं।

कउनु को पूतु पिता को का को ॥
कौन किसका बच्चा है और कौन किसका माता-पिता? यह सोचने पर मजबूर करने वाला सवाल हमें पहचान, मालिकाना हक़, अलगाव और ऊँच-नीच के बारे में फिर से सोचने के लिए प्रेरित करता है

क्योंकि सब कुछ एक ही मूल तत्व से आता है और उसी में वापस मिल जाता है, यह हमारे आपस में जुड़ाव को दिखाता है।

कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥
कौन मरता है, कौन दुःख सहता है और कौन शोक मनाता है। यह एक महत्त्वपूर्ण सत्य बताता है, काम करने वाला, पीड़ित और शोक मनाने वाला आपस में जुड़े हैं और जीवन की लगातार बदलती कहानी में अपनी भूमिकाएँ बदलते रहते हैं जो एक ही अखंड, निरंतर तत्व से उपजी हैं। (१)

हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥
सर्वव्यापी मोहक जादूगर ने संसार पर नशीला जादू कर दिया है। यह उस विरोधाभास को स्वीकार करता है कि जब हम उस भ्रम की प्रकृति और उद्देश्य को समझते हैं तब वही भ्रम ज्ञान का स्रोत बन जाता है।

हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥
हे मेरी माँ, उस सर्वव्यापी सत्ता से अलग होकर मैं कैसे जी सकता हूँ। यह भावना एक मार्मिक विरोधाभास को व्यक्त करती है, अंतरात्मा यह मानती है कि वह दुनिया के मोहक भ्रमों का सामना तब तक नहीं कर सकती जब तक कि वह उस सार्वभौमिक स्रोत से अपना संबंध फिर से स्थापित न कर ले जो उसके मूल में है। (१)(विराम)

कउन को पुरखु कउन की नारी ॥
क्या पुरुष का है और स्त्री का क्या है। यह हमें ध्यान देने के लिए प्रेरित करता है कि शरीर की संरचना और सामाजिक भूमिकाएँ भले ही अलग हो सकती हैं लेकिन हमारे अस्तित्व के मूल तत्व जैविक, बौद्धिक या आध्यात्मिक स्थितियों से परे, सार्वभौमिक हैं।

इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥२॥

शरीर पर चिंतन करके इस सार को समझा जाए। यह बताता है कि शारीरिक रूप में अंतर को केवल शारीरिक स्तर पर ही परखा जा सकता है क्योंकि यह भेद किसी इंसान के मौलिक सत्य या चरित्र को परिभाषित नहीं करते हैं। (२)

कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥

कबीर कहते हैं कि मन उस मायावी ठग से सहमत हो गया है। अब वह भ्रम से संघर्ष नहीं कर रहा बल्कि उस शक्ति को पहचान रहा है जो इस पूरे खेल के पीछे विद्यमान है।

गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥३॥३९॥

ठग को पहचानते ही वह मायावी आकर्षण गायब हो गया। यह दर्शाता है कि जब हम उस सार्वभौमिक चेतना के प्रति जागृत होते हैं जो सभी अनुभवों का आधार है तब हमारे सामने आने वाली माया का प्रभाव समाप्त हो जाता है। (३)(३९)

तत्त्व: भगत कबीर हमारी सांझी मानवता के बारे में ऐसा संदेश देते हैं जो अमर है। वह बताते हैं कि स्त्री और पुरुष के बीच के अंतर केवल सतही स्तर पर दिखाई देने वाले भेद हैं जो अकसर गुमराह करते हैं, हम सभी में एक ही मूल तत्व मौजूद है। वह हमें केवल शारीरिक बनावट और समाज की उम्मीदों से आगे देखने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि हम उन गहरे संबंधों को पहचान सकें जो मनुष्य होने के नाते हमें एक-दूसरे से जोड़ते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com